Volume. 2 January – April, 2025 Issue 1

PTEC

NEWSLETTER

अनुक्रमणिका

नया साल 2025
नये व्याख्याता का
स्टूडेंट्स पिकनिक
गणतन्त्र दिवस
वार्षिक खेलकूद
ब्रिटो डे
स्टाफ पिकनिक
कचरा-प्रबंधन
विज्ञान प्रदर्शनी
कॉलेज डे
शैक्षिक भ्रमण
सेमिनार

संपादक मण्डल

दीपक बिलुंग
अनिशा कुजूर
गोडविन मिंज
रिया रितिका हेंब्रोम

एक बार एक पिता और पुत्र पतंग उड़ा रहे थे। पतंग आसमान में बहुत ऊपर पहुँच गई थी। कुछ देर बाद बेटे ने कहा, पिताजी, लगता है की डोरी पतंग को और ऊपर उड़ने से रोक रही है, अगर हम इसे तोड़ दें तो यह आजाद हो जाएगी। क्या हम इसे तोड़ सकते हैं? पिता ने सहमति दे दी। पतंग थोड़ा ऊपर जाने लगी। बेटा बहुत खुश हुआ। लेकिन धीरे-धीरे पतंग नीचे आने लगी और जल्द ही वह एक इमारत की छत पर गिर गई। यह देखकर बेटा हैरान रह गया। उसने पूछा कि पतंग नीचे क्यों गिर गई?

पिता ने समझाया, हम अक्सर सोचते हैं कि कुछ चीजें हमें ऊपर जाने से रोक रही हैं। जबकि वास्तव में वे ही चीजें हमें जीवन में टिकने में मदद कर रही थी। पतंग और डोरी के साथ भी ऐसा है। बेटे को गलती का अहसास हो गया।

हमारे दैनिक जीवन में भी हमें अक्सर ऐसा देखने व अनुभव करने का अवसर मिलता है। हम पूरी तरह जीवन में स्वतन्त्रता चाहते हैं, लेकिन अनुशासन का धागा हमें बांध के रखता है। हम पाबंदियों के बाहर जाना चाहते हैं, लेकिन नियम और संस्कार हमें एक सीमा तक ही जाने देता है। हम कुछ बड़ा करना चाहते हैं, लेकिन समय का धागा हमें बांधे रखता है, क्योंकि बहुत सारी चीजें समय और उम्र पर भी निर्भर करती हैं। कहने का अर्थ है कि जिस बुनियाद पर आप टिके हैं उसका हमेशा सम्मान करें और समय के साथ चलें। कहीं ऐसा न हो की बंधन का धागा टूट जाय, हम अकेले पड़ जाएं और कहीं के न रहें। जैसा कि आषाढ़ से छूटा किसान और डाली से छूटा बंदर कहीं का नहीं रहता है।

संपादक

पर हिताय नरः नारी

सभी कार्यक्रमों में हिस्सा लेने का संकल्प का साल

नव वर्ष 2025 का साल शुरू दिन से ही अच्छा गुजर रहा है। साल 2024 के मुकाबले 2025 की शुरुआत अच्छे-अच्छे खबरों से हो रही है। 2024 में बुरे-बुरे या गंदी आदतों को छोड़ कर अच्छी-अच्छी आदतों को अपनाने का निश्चय की हूँ। नई-नई चीजों को सीखने के लिए इस वर्ष बहुत उत्सुक हूँ, क्योंकि महाविद्यालय में पूरा साल 2025 गुजारने का सुनहरा मौका है। यहाँ मैं बहुत कुछ सीख रही हूँ। मैं सभी कार्यक्रमों में भाग लेने का प्रयास कर रही हूँ और अच्छी आदतों को सीख रही हूँ।

वतिस्ता यादव
प्रथम वर्ष 'अ'

नया साल

मैं नये साल में अपने परिवार के साथ पतरातू गयी थी। वहाँ सपरिवार हमने बहुत मस्ती की और खुशियाँ मनायी। मैं इस नये साल में संकल्प ली हूँ कि मैं अपने उद्दीपन और आत्मविश्वास को मजबूत करूंगी, अपने समय का सही तरीके से प्रबंध करूंगी और नए कौशलों को सीखने की कोशिश करूंगी। इस साल के शुरुआत से ही मेरा उत्साह उच्च है और उम्मीद करती हूँ कि मैं अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल होउंगी। यह एक नया आरंभ है और मैं खुद से यह वादा की हूँ कि मैं मेहनत और सकारात्मकता के साथ इसे सफल बनाउंगी।

"उज्ज्वल भविष्य की करोगे कामना
होगा कई मुसीबतों से सामना
करना होगा तुम्हें वह पार
जीत मिलेगी तब शानदार।"

मेहर प्रवीण
प्रथम वर्ष 'अ'

नया साल को नए दौर का शुरुआत बनाएँ

नया साल आया है
नई आशाएँ लाया है
चलो इसे अपने में उतारें
और नए साल को नए
दौर की शुरुआत बनाएँ।

मैंने इस नए साल 2025 की शुरुआत नई आशाओं और सपनों के साथ किया। इस नए साल में मैंने यही वादा किया कि इस साल मैं समय को महत्व देते हुए अपना कार्य समय अनुसार करूंगी और अपने जीवन में मैं हमेशा खुश रहूँगी। इस बार मैं नए साल के दिन कहीं नहीं गयी थी। इस बार का नया साल घर में ही अपने छोटे भाई-बहनों के साथ शांति एवं खुशीपूर्वक मनायी। नया साल के शुभ अवसर पर सभी परिवार आँगन में ही शाम के समय ढोलक एवं नगाड़े के साथ नाच-गान किए तथा एक दूसरे के साथ अपना खुशी प्रकट किए।

शोभा लकड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

New year 2025 experience

My last year experience was not very appreciable. There were many ups and downs related to my life.

So, in new year 2025, I took oath to bring a bit of changes in my life. I listed some weak points of myself and took resolutions to improvement. 1st day of the year I had a get-together in my family and enjoyed a lot.

Jaylas Kerketta
First Year 'A'

New year experience

New year is the time to say goodbye to our old and bad habits and to begin a new journey of life with new promises.

I am very grateful to God for the new year 2025. New year brings lots of joy, hope, peace, love and expectations. And with these expectations, I have grown one step ahead in my life. It helps me to challenge my past habits to do better. And always be ready to face new challenges which will help me to become strong and self-confident in my new life.

Ishpriya Minj
First Year 'A'

नये साल का अनुभव

नया साल हमें नई योजनाएँ शुरू करने के लिए प्रेरित करता है और हमें अपना जीवन नए उत्साह और आनंद के साथ जीने की ऊर्जा देता है। नए साल में हम पिछले साल की अपनी गलतियों से सीखते हैं। नया संकल्प या शपथ लेते हैं और पूरी ऊर्जा के साथ अपने काम को करने में लग जाते हैं, जिससे हमें सफलता मिलेगी।

नया साल एक नई शुरुआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है। इस नए साल में मैं भी एक नयी उम्मीद के साथ आगे बढ़ूँगा। जिस प्रकार हम पुराने साल के समाप्त होने पर दुखी नहीं होते, बल्कि नए साल का स्वागत बड़े उत्साह और खुशी के साथ करते हैं, उसी तरह जीवन में भी बीते हुए समय को लेकर हमें दुःखी नहीं होना चाहिए। जो बीत गया गया उसके बारे में सोचने की अपेक्षा आने वाले अवसरों का स्वागत और उनके जरिये जीवन को बेहत्तर बनाने की कोशिश करूंगा।

तोबित केरकेट्टा
प्रथम वर्ष 'अ'

नव वर्ष का अनुभव

नव वर्ष में लोगों को अपनी उपलब्धियों पर विचार करने और आने वाले साल के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करने का एक खास समय होता है। यह समय उत्साह और उम्मीद का पल होता है। नए साल के दौरान संकल्प और नई शुरुआत आम बात है। नए साल के दिन लोग अपने दोस्तों और परिवार वालों को शुभकामनायें और बधाई देते हैं। मैं भी अपने दोस्तों को नव वर्ष में शुभकामनायें और बधाई दिया और नव वर्ष में नए उमंग एवं जोश से अपने लक्ष्य को हासिल करने का हर क्षण कोशिश करने का निश्चय किया।

भूल जाओ बीते हुए कल को
दिल में बसा लो आने वाले पल को
खुशियाँ लेकर आयेगा आने वाला कल
नए साल की ढेर सारी शुभकामनायें।

सिगिन मुंडा
प्रथम वर्ष 'अ'

नव वर्ष 2025

हर वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी मैं 2025 में नई आशाओं और उम्मीदों को पूरा करने के लिए कुछ मनन-चिंतन किया और इन आशाओं को पूरा करने के लिए ईश्वर से आशीर्वाद लिया। उनकी कृपा पाने के लिए नव वर्ष में ईश्वर से प्रार्थना की। सोच रहा था कि नया साल में दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाऊंगा, पर माँ ने जाने से मना कर दिया। मैंने भी माँ की बातें मान ली। उस दिन दिनभर माँ मेरे पास बैठी रही और बहुत सारी बातें की। बातों ही बातों में उसकी आँखों से आँसू आ रहे थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि आँसू क्यों आ रहे थे। आखिरकार मैंने पूछ ही लिया। तो वह चुप रही और कुछ भी नहीं बताई। अंत में उन्होंने एक ही बात कही कि जिस प्रकार तुम्हें अपने दोस्तों के साथ समय बिताने का मन करता है, उसी तरह मुझे तुम्हारे साथ समय बिताने का मन करता है। इन सब बातों को सुनकर और माँ कि भावनाओं को देखकर मेरी भी आँखों में आँसू आ ही गए।

हमारे माता-पिता हमारे लिए अपनी खुशियों को त्याग देते हैं। इसलिए हमें उनकी भावनाओं को समझना चाहिए और उनकी खुशियों का भी ख्याल रखना चाहिए।

जेवियर भेंगरा
प्रथम वर्ष 'अ'

नई शिक्षिका का आगमन

नई उमंग, नई तरंग
इसे ही कहते हैं जीवन का रंग
डांटना, दुलारना और पुचकारना
है व्यक्तित्व का ढंग।
उषा के साथ नई किरण की शुरुआत हुई
और आप जैसे शिक्षिका से हमारी मुलाकात हुई
करते हैं हम सभी आपको शत-शत नमन
आप ही के कारण बढ़ता है हमारा जीवन।
गुरु शिक्षा की खान है
जग में गुरु महान है
हम खुद को धन्य समझते हैं
ज्ञान का भंडार बढ़ाते हैं
हमें अच्छे संस्कार दे जाते हैं
जो हैं अटके, भूले-भटके
उनको राह दिखाते हैं
संसार का सैर कराकर
जग का नाता बताते हैं।

करीना तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

मैम उषा गुड़िया के आने की खुशी

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि इस महाविद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु आप चुने गए हैं। नया होने के बावजूद आपमें आत्मविश्वास तथा पढ़ाने का तरीका बहुत अच्छा है। आशा है हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य कि कामना करता हूँ।

हार को जीत की दुआ मिल गयी
ठंडी मौसम में गर्म हवा मिल गयी
आप आए कॉलेज में
यूँ लगा जैसे हमारे महाविद्यालय को
अनोखा उपहार मिल गयी।

रजत बागे
प्रथम वर्ष 'ब'

नई शिक्षिका के आने की खुशी

ज्ञान देने वाले गुरु का वंदन है
उनके चरणों की धूल भी चन्दन है।।

शिक्षक हमारे जीवन में वह व्यक्ति होता है जो हमें अच्छी शिक्षा के साथ बहुत सी अन्य महत्वपूर्ण चीजों को सिखाता है। जब हमारे महविद्यालय में नई शिक्षिका का आगमन हुआ, तो महाविद्यालय में नयी किरण का उदय हुआ। नयी मैम श्रीमती उषा गुड़िया के आने से पूरा महाविद्यालय परिवार बहुत ही खुश हुआ। मैम का पढ़ाने का तरीका, उनकी बातें, व्यवहार, रहन-सहन मुझे बहुत ही प्रभावित किया। वे पाठ्यक्रम को बहुत ही सरल तरीके से व्याख्यान कर हमें पढ़ाती हैं। हम सभी मैम उषा को पाकर बहुत खुश हैं।

अंजना सोरेंग
प्रथम वर्ष 'ब'

खुशियाँ

कॉलेज में नई मैम आयी है, जिससे मुझे बेहद खुशी है। वह एक अनुभवी शिक्षिका हैं। वह हमें अच्छे से पढ़ाती और समस्याओं का समाधान करती है। मुझे उससे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा, जिसके लिए मैं बहुत उत्सुक हूँ। मैम बहुत ही अच्छी तरह से क्लास को चलाती हैं। उसके क्लास में मुझे बोर बिलकुल नहीं लगता बल्कि कुछ नया जानने की उत्सुकता रहती है। वे क्लास को बहुत ही रोमांचक बना देती है, जिससे पढ़ाया गया विषय दिमाग में जल्दी आ जाता है। मेरी खुशकिस्मती है कि वो मेरी क्लास टीचर भी है। मैं उम्मीद करता हूँ कि वे हमें अपने गंतव्य तक पहुँचने में भरपूर सहयोग एवं हमारा मार्गदर्शक बनेगी।

सचिन मारंडी
प्रथम वर्ष 'ब'

नई मैम का आगमन PTEC में

जीवन खुशी और दुख का संगम है। किसी से मिलना, किसी से बिछड़ना यह जीवन की रीत है। मैम सुमन का जाना और मैम उषा का आना इसी का एक उदाहरण है। मैम उषा के आने से हम बहुत खुश हैं क्योंकि मैम का शिक्षा के प्रति समर्पण उनके व्यक्तित्व में झलकता है। बहुत ही कम समय में हमारे साथ घुल-मिल गयी और हम भी उनके साथ घुल-मिल गए हैं।

आपके आने से मन में ये ख्याल आया
हर सवाल का जबाब आया
मैम सुमन की जो कमी थी
उस कमी का हल आया।

आनंद तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

नई मैम के आने की खुशी

मैं मैम उषा गुड़िया के अच्छे गुणों को अपने जीवन में ग्रहण करना चाहता हूँ। जिससे कि मेरा जीवन अच्छे मार्ग कि ओर बढ़े तथा नैतिक तथा अच्छे व्यक्तित्व के गुणों का विकास हो सके। मैम के आने से महाविद्यालय में सकारात्मकता का माहौल बन गया है। उनका दृष्टिकोण हमें केवल शिक्षित करना ही नहीं बल्कि हमारे अंदर की छिपी गुणों को विकसित करना है।

पास्कल हस्सा
प्रथम वर्ष 'ब'

नई मैडम के आने की खुशी

नई मैडम का आना हमारे लिए बहुत ही खास है। सभी के चेहरे पर उत्साह और खुशी है। मैडम का व्यक्तित्व सहजता और आत्मीयता से भरा हुआ था। उन्होंने अपनी सादगी और मुस्कान से हमारे दिलों को छु लिया। उन्होंने हमें बताया कि शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

उनकी पढ़ाने की शैली बेहद रोचक और प्रेरणादायक है। पहले ही दिन उन्होंने हमारे साथ न केवल विषय से संबंधित चर्चा की, बल्कि हमें जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों के बारे में भी बताया। उनकी बातों से हमें यह महसूस हुआ कि वे न केवल एक शिक्षिका है, बल्कि हमारा मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत भी है।

हम दिल से उनका स्वागत करते हैं और उनके साथ एक शानदार शैक्षिक यात्रा की उम्मीद करते हैं।

असित लकड़ा
प्रथम वर्ष 'ब'

महाविद्यालय में 11 जनवरी 2025 को क्रॉस कंट्री रेस का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों को चार दलों (पुरुष-ए, पुरुष-बी, महिला-ए, महिला-बी) में बांटा गया था। पुरुष वर्ग को अपनी दौड़ महाविद्यालय से शुरू कर तेली टोला, लालपुर चौक, सी.एन.आई. चर्च, कारी टोंगरी होते हुए महाविद्यालय में ही खत्म करना था। जबकि महिला वर्ग को अपनी दौड़ महाविद्यालय से शुरू कर हॉली क्रॉस के पश्चिमी गेट से अंदर घुसकर, कारी टोंगरी होते हुए महाविद्यालय में ही खत्म करना था। सभों ने बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक दौड़ में हिस्सा लिया।

पुरुष ए -	प्रथम- जोवाकिम तोपनो	द्वितीय- रोहित किस्कू	तृतीय- रोशन मिंज
पुरुष बी -	प्रथम- अरमान सोरेंग	द्वितीय- जोन लकड़ा	तृतीय- प्रियाल मिंज
महिला ए -	प्रथम- आभा तिर्की	द्वितीय- अलबीना कंडुलना	तृतीय- अल्फा कुजूर
महिला बी -	प्रथम- अलिशा बड़ा	द्वितीय- अलिशा तिर्की	तृतीय-आभा सोरेंग

कार्यक्रम की समाप्ति सफलतापूर्वक हुई और वार्षिक खेलकूद के आयोजन का आगाज किया गया।

विजेताओं के साथ प्राचार्य व खेल इंचार्ज

JAN
13

Happy
Birthday

पिकनिक

पिकनिक का दिन एक ऐसा दिन है जिसमें कि सभों के साथ मिलजुलकर रहना पड़ता है और हाथों में हाथ बांटना पड़ता है। पिकनिक शब्द सुनकर ही मन में खुशी कि लहर उठ रही थी। साथ ही, यह भी सुनने को मिल रहा था कि कॉलेज का पिकनिक बहुत ही मजेदार होता है। पिकनिक के दिन हमें विभिन्न दलों में बांटकर काम दिया गया। सभी ने जिम्मेदारीपूर्वक अपने कामों को किया। समूह में काम करने का अनुभव एवं समय पर सभी चीजों का प्रबंध करना मुझे बहुत अच्छा लगा। पिकनिक का स्वादिष्ट भोजन खाकर मुझे तृप्ति हुई। नाच के समय भी लड़के और लड़कियां अलग-अलग दल में नाच रहे थे, इस तरह से कोई दिक्कत नहीं हुई।

संतरीमा लकड़ा
प्रथम वर्ष 'ब'

वार्षिक वनभोज

जीवन की भागदौड़ से थोड़ा समय चुराना है
अपनों के साथ जीने का मौका नहीं गंवाना है
पिकनिक तो एक बहाना है।

दिनांक 18 जनवरी को महाविद्यालय में वार्षिक वनभोज का आयोजन किया गया था। इस पल का इंतजार हम सभों को बहुत ही बेसब्री से था और वकाई ये लम्हा बहुत ही अद्भुत एवं मनोरंजक ठहरा।

इस वनभोज में अपनों के साथ समय बिताने के साथ-साथ मैं बहुत कुछ सीखी। जैसे-पत्तल सिलना, समूहिक कार्यों को भी बड़े आसानी से हँसते-हँसते पूरा करना। यह 18 जनवरी वाकई हमारे इस नववर्ष का सुंदर आरंभ था।

खाना-पीना मौज उड़ाना
एक दूजे पे प्यार लुटाना है
कल से फिर काम पे लग जाना है
पिकनिक तो एक बहाना है।

रिया रितिका हेम्ब्रोम
प्रथम वर्ष 'ब'

वार्षिक वनभोज

वार्षिक वनभोज के लिए मैं बहुत ही उत्साहित थी। वनभोज के एक दिन पहले हमें पत्ते तोड़ने के लिए जंगल भेजा गया, फिर उसी शाम हमने सिलकर पत्तों का प्लेट बनाया, जिसे हम पिकनिक के दिन प्रयोग कर पाये। उस दिन सभी दलों को काम बाँट दिया गया था, जिससे वनभोज का सारा कार्य जल्दी और अच्छे से हो गया। मुझे यह देखकर अच्छा लग रहा था कि सभी लोग अपने कार्य को अच्छे से और खुशी-खुशी कर रहे थे। वनभोज के अंत में हमने सामूहिक नृत्य किया और सबने बहुत ही आनंद और उल्लास के साथ वनभोज का कार्यक्रम समापन किया।

रूपांजलि तिग्गा

प्रथम वर्ष 'ब'

वार्षिक वनभोज का अनुभव

वार्षिक वनभोज के कार्यक्रम को हम सभी प्रशिक्षणार्थी एक-दूसरे की मदद से सफल बनाए। इसमें हमलोग बहुत मस्ती किए। बड़े समूह में वनभोज कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। सभों ने मिलकर डांस किया, मिलजुलकर समय बिताया और सभी कार्यों को सम्पन्न किया। समूह में नया चीज सीखने का अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ।

असमीता सांडिल

प्रथम वर्ष 'ब'

वनभोज

हर बीते वो दफा
यादें करो तरोताजा वनभोज में
मिलकर अपनों से वनभोज में
साझा करो अपनी खुशियाँ

चेहरे पे मुस्कान लिए
दिल पे आशा लिए
सहभाग बनें वनभोज में
सिखा देगी ये आपको जिम्मेदारियाँ उठाना।

अलिसा तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

गणतन्त्र दिवस फिर आया है

गणतन्त्र दिवस फिर आया है,
संविधान का तोहफा लाया है।
यूं तो सन सैंतालीस में
भारत था आजाद हुआ
पर न कोई अपना संविधान
न गणतन्त्र आबाद हुआ।

फिर एक दिन ऐसा आया
संविधान आजादी वाला लाया
अधिकार सबको दिए बराबर
भारत को गणतन्त्र बनाया
ऊंच-नीच का भेद न करता
सबके हित की बात है करता
कर्तव्यों का पालन करवाता।

गणतन्त्र दिवस फिर आया है,
संविधान का तोहफा लाया है।

लिशा कुमारी
द्वितीय वर्ष 'ब'

गणतन्त्र दिवस

भारत हर साल 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस मनाता है। 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू किया गया था। यह एक ऐसा दिन है जो लोगों को देश के लोकतांत्रिक ढांचे में उनकी भूमिका और संविधान में निहित मूल्यों को बनाए रखने के महत्व को याद दिलाता है।

हर साल की भांति इस वर्ष भी हमारे कॉलेज में प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थी, अभ्यास मध्य विद्यालय के विद्यार्थी तथा संत जेवियर +2 उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों के द्वारा मार्च-पास्ट किया गया। साथ ही कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें देश भक्ति नृत्य, भाषण, झांकी प्रमुख थे।

अंत में, हमारा PTEC प्रांगण अनेकों देशभक्ति नारों से गूंज उठा।

अलका खाखा
द्वितीय वर्ष 'अ'

मैदान बनाने का अनुभव

मैंने पहली बार इस प्रकार के कार्यों में भाग लिया था और मुझे खुशी थी कि मुझे यह अवसर मिला। मुझे इस दौरान नई-नई चीजों को सीखने का अवसर मिला तथा मैदान को नापकर ट्रैक का निर्माण करने की जानकारी हुई। मैदान में ट्रैक निर्माण के दौरान विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग किया। जैसे- कुदाल, छड़, तार, रस्सी, टेप इत्यादि। मैंने जाना कि किस प्रकार तारों को बिछाकर कुदाल की सहायता से ट्रैक काटा जाता है। हमलोगों ने मैदान निर्माण के दौरान खूब मजे कर कार्य किया तथा इसमें हम सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया एवं बेहत्तर तरीके से सीखने का प्रयास किया।

प्रणित तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

खेल मैदान बनाने का अनुभव

मैदान बनाने के लिए मेरा नाम लिस्ट में डाला गया तो मैं बहुत खुश था क्योंकि शारीरिक शिक्षा में मैदान का निर्माण और विभिन्न प्रकार के खेलों के बारे में प्रोजेक्ट कार्य दिया गया था। बाद में जिसे मुझे बनाने में आसानी हुई। मैदान बनाते वक्त मैंने बहुत कुछ सीखा। जैसे- 100 मीटर ट्रैक का निर्माण, 2×100 मीटर ट्रैक का निर्माण करना इत्यादि। साथ ही साथ, खेलों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

अलकन मिंज
प्रथम वर्ष 'ब'

मैदान तैयार करने का अनुभव

मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि इस महाविद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है और इसके लिए ट्रैक भी अपने से बनाना पड़ता है। ट्रैक बनाने को लेकर हम सबमें जोश और सीखने की उत्सुकता थी। हम सभी ने अपने कार्यों को ईमानदारीपूर्वक करते हुए बड़ी मेहनत के साथ लंबी कूद, ऊंची कूद, गोला फेंक, 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर का ट्रैक बनाया। इन कार्यों को करते हुए हमें स्पोर्ट्स के प्रतियोगिताओं के लिए मैदान तैयार करने की जानकारी मिली और हमने सीखा। विश्वास है कि यह सीख मेरे आगे के जीवन के लिए बहुत अधिक उपयोगी व सहायक सिद्ध होगी।

निशांत टोप्पो
प्रथम वर्ष 'ब'

मैदान निर्माण कार्य का अनुभव

मैदान निर्माण कार्य का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। इस दौरान मैंने स्पोर्ट्स में होने वाली सभी प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। पहले भी स्कूल में इन सभी प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका हूँ। अतः मुझे खेलों के बारे में जानकारी है। लेकिन मैदान और ट्रैक का निर्माण के बारे में मुझे मालूम नहीं था। हमारे सीनियर्स ने हमें ट्रैक के निर्माण करने सिखाया और हम सीख भी गए। इसे हम अपने भावी जीवन में प्रयोग में ला सकते हैं। मैं हमारे सीनियर्स तथा महाविद्यालय को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ यह सुनहरा अवसर प्रदान करने के लिए।

रजत बागे
प्रथम वर्ष 'ब'

मैं अनुपमा किंडो सभी ब्रिटो दल की तरफ से अपने दल का अनुभव साझा कर रही हूँ। कहा जाता है कि संत जॉन ब्रिटो को समुद्र के तट पर ले जाकर सर कलम कर दिया गया था और उनके खून से वहाँ की रेत सना है। उनके खून के लाल रंग को हम सभी ब्रिटो दल दर्शाते हैं।

एक दल के रूप में हम सभी को विभिन्न कार्यक्रमों एवं कामों को जैसे-रोपा रोपना,धान काटना, परेड करना, स्पोर्ट्स में भाग लेना आदि को बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। सभी कामों में हमने एक दूसरे का उत्साह बढ़ाया एवं हौसला बुलंद किया।

हम सभी ब्रिटो दल के सदस्य संत जॉन ब्रिटो के जीवन से प्रेरित होकर उनके बलिदान को अपने कर्मों, व्यवहार और आचरण द्वारा बरकरार रखेंगे।

ST. JOHN DE BRITTO

BRITTO DAY
4 FEBRUARY

विजेता-क्रॉस कंट्री Boys-A

विजेता-क्रॉस कंट्री Girls-A

विजेता-क्रॉस कंट्री Boys-B

विजेता-क्रॉस कंट्री Girls-B

विजेता-Javelin (Boys)

विजेता-Javelin (Girls)

विजेता-Long Jump (Boys)

विजेता-Long Jump (Girls)

विजेता-Discus Throw (Boys)

विजेता-Discus Throw (Girls)

विजेता-Shot-put (Boys)

विजेता-Shot-put (Girls)

विजेता-High Jump (Boys)

विजेता-High Jump (Girls)

विजेता-Triple Jump (Boys)

विजेता-Thread Needle (Girls)

विजेता-Tug-of-war (Girls)

विजेता-Tug-of-war (Boys)

विजेता-400 Mtr (Girls)

विजेता-400 Mtr (Boys)

विजेता-800 Mtr (Boys)

विजेता-800 Mtr Open (Girls)

विजेता-1500 Mtr Open(Boys)

विजेता-Rope Race (Girls)

PTEC Cricket Team

विजेता-Hurdle Race (Boys)

वार्षिक खेल-कूद

2025

का चैंपियन

ब्रिटो हाउस

खेल हमारे सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही जरूरी है, क्योंकि यह हमें बहुत ही अच्छी शिक्षा दे जाती है। खेल के माध्यम से हममें आत्मविश्वास, नैतिकता और शिष्टता आती है। खेल हमें अनुशासन में रहना सिखाता है।

हमारे महाविद्यालय में 8 फरवरी को वार्षिक खेलकूद कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। खेलकूद का दिन आते ही ऐसा लगता है मानों त्योहार का मौसम आ गया हो। उस दिन का माहौल भी कुछ ऐसा ही था। उस दिन के हमारे मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार जिला शिक्षा पदाधिकारी, हजारीबाग और विशिष्ट अतिथि श्री रजत नाग शिक्षक, शारीरिक शिक्षा, संत ज़ेवियर स्कूल, हजारीबाग थे। मेहमानों का स्वागत झारखंडी माँदर और नगाड़ा की धुन से हुई। माँदर की थाप सुनकर मेरे पैर भी थिरक रहे थे। मेहमानों का स्वागत के बाद हम सभी प्रशिक्षणार्थी परेड और ड्रिल प्रस्तुत किए। इसके बाद हमारा खेलकूद प्रतियोगिता शुरू हुआ। सभों ने खेल में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जैसे-जैसे प्रतियोगिता खत्म हो रही थी, वैसे-वैसे हमारे दिलों की धड़कने भी बढ़ रही थी और लालायित थे अपने दल का परिणाम जानने के लिए। अंतिम में वह पल आ ही गया जब हम सभी का परिणाम हमें बता दिया गया। मेरे दल को हार का सामना करना पड़ा। परिणाम जो भी हो हमारे दल का हौसला कम नहीं हुआ। फिर मेरे दिल ने दस्तक दी **"हार भी जाओ तो गम न करो, फिर से खेलो मगर हौसला कम न करो।"**

मनीषा टेटे
द्वितीय वर्ष 'B'

वार्षिक खेलकूद 2025

महाविद्यालय में वार्षिक खेलकूद की शुरुआत मुख्य अतिथियों का स्वागत से किया गया। इस कार्यक्रम की तैयारी हम सब बहुत पहले से ही कर रहे थे। जो कि आज इस दिन में भाग लेने का मौका आया। सबसे पहले परेड और ड्रिल से शुरू किया गया। ड्रिल बहुत ही सुंदर और आकर्षक था। यह भी देखने को मिला कि प्रतिभागी अपने-अपने एवेंट्स में भाग लेने के लिए अनुशासन में रहकर खेल भावना का परिचय दिये। सभी प्रतिभागी पूरे मन से, ईमानदारीपूर्वक नियमों के अनुसार एवेंट्स में भाग ले रहे थे। दोनों स्कूल और महाविद्यालय का एक साथ सामंजस्य बनाकर कार्यक्रम को सफल बनाना बहुत ही मायने रखता है। छोटे-छोटे बच्चों के दौड़ को देखकर मुझे मेरा बचपन याद आ गया और मैं बचपन के ख्यालों में बहुत देरी तक डूबी रही। अंतिम में हम सबने अपने-अपने दल में जश्न मनाया। मेरे दल को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। जिसकी खुशी हमने मैदान के चारों ओर दौड़ कर प्रदर्शित किया।

नोशीला कुमारी
द्वितीय वर्ष 'B'

वार्षिक खेलकूद महोत्सव

"शारीरिक और मानसिक संतुलन एवं विकास के लिए जीवन में खेल खेलना जरूरी है।"

इस वर्ष हमारे खेलकूद महोत्सव के मुख्य अतिथि श्री प्रवीण कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी, हजारीबाग तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रजत नाग, शारीरिक शिक्षा विभाग, संत जेवियर स्कूल हजारीबाग मौजूद थे। सबसे पहले अतिथियों का स्वागत आदिवासी परंपरा के अनुसार किया गया। तत्पश्चात झंडोतोलन, सामूहिक मार्च-पास्ट तथा मशाल जलाकर खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। दर्शकों के लिए यह कार्यक्रम बहुत ही रोमांचक भरा था। सभी प्रतिभागियों ने अपने दल को जिताने के लिए खूब प्रयास किया।

अंत में सामूहिक नृत्य किया गया। सभी के चेहरों पर अलग-सी मुस्कान और नई उम्मीदें दिखाई पड़ रही थी। इस तरह से हमारा वार्षिक खेलकूद का कार्यक्रम विधिवत सम्पन्न हुआ

प्रिया कुल्लू
द्वितीय वर्ष 'B'

खेलकूद प्रतियोगिता

हमारे महाविद्यालय में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी खेलकूद प्रतियोगिता रखा गया। अतिथियों का स्वागत बहुत ही धूमधाम से गाजा-बाजा के साथ किया गया। मुख्य अतिथि के मुख से इस महाविद्यालय की तारीफ सुनकर बहुत ही अच्छा लगा और गर्व महसूस की कि मैं भी इस महाविद्यालय की एक प्रशिक्षणार्थी हूँ।

खेलकूद प्रतियोगिता में मैंने पूरे लगन और मन से भाग लिया। बिना हार माने अपनी मंजिल को प्राप्त किया। मैं कहना चाहूंगी कि

"न हारना जरूरी है न जीतना जरूरी है,
जीवन एक खेल है खेलना जरूरी है।"

यही सुविचार को ध्यान में रखकर मैं मैदान में उतरी और खेल के नियमों की जानकारी प्राप्त की।

सलेम मुर्मू
द्वितीय वर्ष 'B'

वार्षिक खेलकूद दिवस

"आत्मविश्वास और जुनून को इस कदर बढ़ाओ कि खुद को इस दुनिया का बेहतरीन खिलाड़ी बनाओ।"

वार्षिक खेलकूद दिवस का माहौल ऐसा था कि अतिथियों के स्वागत के समय जब माँदर बज रहा था तो बहुत ही नाचने का मन कर रहा था। ड्रिल के दौरान मुझे बहुत ही आनंद महसूस हो रहा था। एवेंट्स में भाग लेना मेरे लिए महत्वपूर्ण था। खूब तालियाँ बजी। दर्शकों के उत्साह और जोश चरम पर था। दर्शक के साथ-साथ हमारे लिए भी यह दिन यादगार दिन बन गया। एक महिने के चहल-पहल, फिर खेलकूद दिवस के सम्पन्न होने के बाद का सूनापन कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। महसूस होता है कि फिर से जल्द ही कोई कार्यक्रम हो, लेकिन आगे पढ़ाई भी तो करनी है। अंततः यही कहना चाहती हूँ कि महाविद्यालय खेल दिवस का हिस्सा बनना मुझे बहुत अच्छा लगा।

जसवंती सोरेंग
द्वितीय वर्ष 'B'

हॉली क्रॉस कृषि विज्ञान केंद्र, हजारीबाग की सि॰सजिता के मार्गदर्शन में PTEC में वर्मीकम्पोस्ट के लिए केंचुआ छोड़ा गया। PTEC के प्राचार्य डॉ॰ फा॰ पी॰जे॰ जेम्स ये॰स॰ की अगुआई में यह बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। जो अपने-आप में ही एक उपलब्धि है। केंचुआ खाद जो की जैविक खेती के लिए एक वरदान है। जैविक खेती में केंचुआ खाद (वर्मीकम्पोस्ट) की भूमिका स्वस्थ्य पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण वरदान साबित हुआ है और इसकी सार्थकता राष्ट्रीय एवं अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकारा गया है।

केंचुआ कार्बनिक अपशिष्ट को उपयोगी खाद बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कार्बनिक अपशिष्ट का कुछ भाग अवशोषित कर लेते हैं और शेष छोटे-छोटे दानेदार विस्टा (मल) के रूप में उत्सर्जित करते हैं। यह उत्सर्जित जीवांश पदार्थ ही वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद) कहलाता है।

वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद) के लाभ :

1. केंचुआ खाद के प्रयोग से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में पर्याप्त सुधार होता है जिससे भूमि की उर्वरकता लंबे समय तक कायम रहती है।
2. केंचुआ खाद में पौधे के लिए आवश्यक लगभग सभी पोषक तत्व मौजूद होते हैं जो पौधे को आसानी से प्राप्त हो जाता है। जिससे पौधों का अच्छा विकास होता है।
3. केंचुआ खाद में जल ग्रहण करने की क्षमता होती है जो वातावरण से नमी एवं सिंचाई के रूप में पौधों को दिए गए पानी को अवशोषित करती है। अतएव इसका उपयोग करने पर पौधे में बार-बार या अधिक पानी देने की आवश्यकता नहीं होती है।
4. केंचुआ खाद में पौधे को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने वाले जीवाणु, कवक, कीट इत्यादि उपस्थित नहीं होते हैं।
5. केंचुआ खाद में उपस्थित एक्टिनोमाइसिटिज़ अनेक प्रकार के एंटीबायोटिक पदार्थों का सृजन करते हैं जिससे पौधे में कीट व्याधियों से बचाव की प्रतिरोधी क्षमता बढ़ जाती है।
6. केंचुआ खाद से खरपतवारों के बीज नहीं होते, इसलिए इसका प्रयोग करने से खेत में किसी भी तरह के खरपतवार की समस्या नहीं होती है।
7. केंचुआ खाद में अनेक जैव क्रियाशील यौगिक (ऑक्सीजन, जिब्बेरलीन, सायटोकाइनिन, विटामिन, एमिनो एसिड इत्यादि) पर्याप्त मात्रा में मौजूद होते हैं जिससे पौधों में समुचित वृद्धि तथा अधिक उपज देने की क्षमता का विकास होता है।
8. केंचुआ खाद के कणों पर पेराट्रापिक झिल्ली का आवरण होता है जिससे खाद में उपस्थित नमी का शीघ्रता से वाष्पीकरण द्वारा ह्रास नहीं होता और भूमि में दिए गए पानी को अधिक समय तक रोकने में मदद मिलती है।
9. केंचुआ खाद के उपयोग से पैदा किए गए उत्पादों की गुणवत्ता (स्वाद, रंग, रूप, आकार, भंडारण क्षमता इत्यादि) में सुधार होने की वजह से उत्पादों की बिक्री से आय में वृद्धि होती है।
10. केंचुआ खाद का उपयोग करने से उत्पादन लागत घट जाती है।

सभी लोगों की एक इच्छा होती है कि नववर्ष की शुरुआत उमंग और हर्षोउल्लास के साथ हो। पहला काम कुछ ऐसा करें जिससे कि हमें खुशी और आनंद मिले। ऐसा महसूस हो कि सालोंभर ऐसी ही खुशी और आनंद का माहौल बना रहे। वैसे भी देखा जाय तो हम साल के प्रथम महीने अर्थात जनवरी में पिकनिक के मूड में ही रहते हैं। कभी परिवार के साथ, कभी दोस्तों के साथ, स्कूल या कॉलेज में हो तो कभी बच्चों के साथ, तो कभी स्टाफ के साथ। कहने का अर्थ है कि हम बिना पिकनिक मनाये साल कि शुरुआत करने को राजी नहीं होते। हम किसी भी दल के साथ पिकनिक मनाने के बाद ही दम लेते हैं। ऐसा ही कुछ हुआ महाविद्यालय के स्टाफ पिकनिक में। दिसंबर 2024 से ही स्टाफ पिकनिक कि बातें हो रही थी। जिसको हमने 15 फरवरी 2025 को महाविद्यालय परिसर में सम्पन्न किया। दल छोटा हो या बड़ा पिकनिक का स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करना भी कोई खेल नहीं। व्यंजन तैयार करने और सामानों की व्यवस्था करने में सभों की उपस्थिति और सहयोग सराहनीय रहा। एक दल के रूप में समंजस्य स्थापित कर सभी ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया। सभी ने अपनी पाक-कला से एक दूसरे को आचंभित किया। खुले स्थान में एक साथ पिकनिक के नाम से बैठने का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे एक दूसरे के विचारों एवं भावनाओं को और गहराई से जानने का मौका मिला। अंततः पिकनिक का वह दिन खुशीपूर्वक बीता।

आओ हम मिलकर प्लास्टिक मुक्त
और
पर्यावरण के अनुरूप पृथ्वी का निर्माण करें

पृथ्वी जो हमारी धरती माँ है। हमें जीवन देती है। हमें तरोताजा हवा प्रदान करती है। हमारे स्वास्थ्य को बेहत्तर रखने के लिए पर्यावरण से संतुलन बना के रखती है। लेकिन हम मानव इसे समझ नहीं पाते और पर्यावरण को विभिन्न प्रकारों से प्रदूषित कर पृथ्वी को असंतुलित करते हैं और हानि पहुंचाते हैं, धरती माँ को दुख देते हैं। उनमें प्रमुख हैं- जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण। इन प्रदूषणों का निपटान हेतु प्रबंधन न करके हम ही बढ़ावा देते हैं। इन्हीं से पर्यावरण को अत्यधिक क्षति पहुँचता है।

पर्यावरण की रक्षा की ज़िम्मेदारी हम सभों की है। सरकार अपने तरीके से प्रदूषण रोकने और पर्यावरण को शुद्ध बनाने का बहुत प्रयास कर रही है। आदर्श नागरिक होने के नाते यह हमारी भी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम साथ मिलकर ईमानदारीपूर्वक पर्यावरण और पृथ्वी को बचाने में कर्तव्य निभाएँ। अतः महाविद्यालय परिसर में भी प्राचार्य की अगुवाई में कचरा प्रबंधन का बीड़ा उठाया गया है। महाविद्यालय, +2 उच्च विद्यालय और मिडिल स्कूल में डस्ट्बिन की व्यवस्था की गयी है, ताकि कचरे का उचित निपटान किया जा सके।

सूखे पत्तों, घास, पुवाल, पेपर, आदि के उचित निपटान के लिए वर्मी-कम्पोस्ट बनाने की भी व्यवस्था की गयी है, ताकि कचरा भी साफ हो जाय और खेती तथा बागवानी के लिए खाद भी मिल जाय। साथ ही, पर्यावरण भी दूषित न हो।

काँच, लोहा, टीना, आदि के लिए अलग-अलग गड्डों की भी व्यवस्था की गयी है। ताकि उन्हें अलग-अलग रखा जा सके।

रिसाइकल होने वाले प्लास्टिक के लिए भी अलग से एक गड्डा है, जिसमें प्लास्टिक को जमा करने की जरूरत है। प्लास्टिक ही एक ऐसा चीज है जिसे सड़ने में सालों लग जाते हैं। जमीन में रहे तो जल को भूमि के अंदर जाने से रोकता है, जल जैसे – तालाब, कुआं, नदी में रहे तो पानी को बहने में अवरोध उत्पन्न करता है, साथ ही, कचरा का अंबार बनाता है। दोनों ही परिस्थिति में प्लास्टिक पानी को प्रदूषित करता है। प्लास्टिक को अलग रखने से उसे बाद में रिसाइकल के लिए भेजा जा सकता है।

न चाहते हुए भी कुछ चीजों को जलाने की आवश्यकता होती है। अतः एक Incinerator की व्यवस्था की गयी है, जिसमें उपरोक्त कामों में उपयोग न होने की स्थिति में जलाया जा सकता है।

आशा है आप सभी हमारे कचरा प्रबंधन के अभियान में कदम-से-कदम मिलाकर साथ देंगे और भविष्य में दूसरों को भी इस अच्छी आदत में सहभागी बनाएँ। आइये, हम सब मिलकर एक स्वच्छ पर्यावरण बनाने का संकल्प लें और अगली पीढ़ी को स्वस्थ पर्यावरण का उपहार दें।

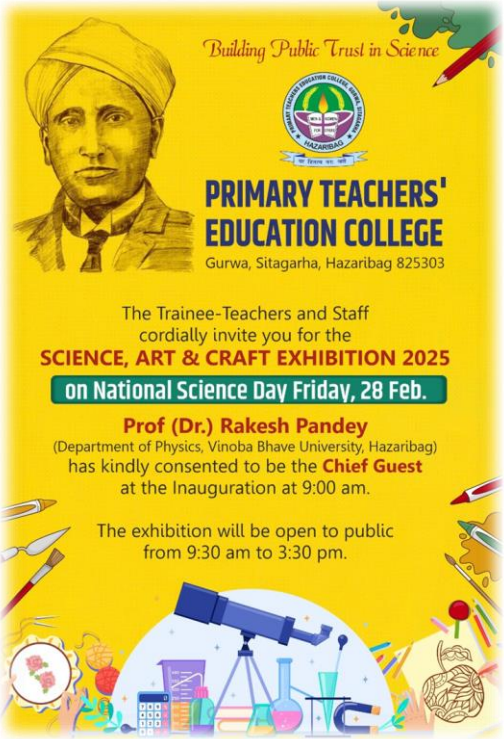

विज्ञान प्रदर्शनी 2025

"विज्ञान हमारे जीवन को सफल बनाता है"

हमारे महाविद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। उस दिन मैं बहुत उत्सुकता के साथ कॉलेज आयी। सबसे पहले डॉ सी.वी. रमन को याद करते हुए प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। जैसे-जैसे समय बीतते जा रहा था मन में बड़ी खुशी और उम्मीद की लहर जगाते गई और खुशी महसूस हो रही थी कि मैं प्रदर्शनी में एक विशेष प्रोजेक्ट लोगों तक पहुंचा रही थी। दूसरे स्कूल के विद्यार्थी एवं दर्शक लगन के साथ जानकारी ले रहे थे। एक नई उम्मीद जगी कि मैं भी हर कार्य कर सकती हूँ इस तरह महाविद्यालय में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी फायदेमंद एवं एक अच्छा अनुभव दे गया।

अंजली मरांडी
द्वितीय वर्ष "ए"

विज्ञान प्रदर्शनी

विज्ञान ने हमें सच्चाई तक पहुंचाने का भरोसा दिया है । इसने हमें शांति या सुख तक पहुंचने का आश्वासन कभी नहीं दिया। कला और विज्ञान अलग-अलग होते हुए भी एक दूसरे से जुड़ सकते हैं। इस विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लेकर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। जैसे कि हम अपने बारे में बता सकते है, प्रेजेंटेशन के शुरुआत में मुझे बहुत ही ज्यादा डर लग रहा था लेकिन मैं अपने डर को भगाते हुए पूरी कोशिश की और अंत में अच्छा ही हुआ। विगत सालों की तुलना में इस साल बहुत ही अच्छा रहा क्योंकि सभी ने कुछ न कुछ अपने नए कलाओं को दिखाया है और ये बहुत ही सुन्दर था। शिक्षण एक विज्ञान है, एक कला है, एक शिल्प है, यह एक विज्ञान है जिसमें ऐसी रणनीतियां और अभ्यास हैं जो बहुत प्रभावी साबित हुआ है।

नूतन डुंगडुंग
द्वितीय वर्ष "ए"

विज्ञान प्रदर्शनी

28 फरवरी विज्ञान दिवस के सुअवसर पर हमारे महाविद्यालय में आयोजित इस बार का विज्ञान प्रदर्शनी बहुत ही रोमांचक था। सभी दल के मॉडल्स एक से बढ़कर एक थे। मेरे दल के मॉडल का टॉपिक था – **चंद्रयान-3** इस मॉडल को प्रस्तुत करना थोड़ा कठिन था पर उतना ही रोचक लग रहा था। उस दिन जब स्कूल के बच्चे हमारे प्रोजेक्ट के बारे में पूछ रहे थे तो हमें बहुत ही अच्छा लग रहा था। जब चंद्रयान-3 को लॉंच किया जा रहा था तो बच्चों के चेहरे पर एक अलग ही खुशी झलक रही थी। बच्चे चंद्रयान को उड़ते हुए देखकर बहुत ही खुश थे और कह रहे थे कि वो भी एक वैज्ञानिक बनेंगे। यह सुनकर हमें और भी अच्छा लग रहा था कि हम भी इसरो के सदस्य हैं। विज्ञान प्रदर्शनी के द्वारा मुझे भारत के विकास एवं ऐतिहासिक पल को सभों के सामने प्रस्तुत करने में बहुत ही गर्व महसूस हो रहा था।

मनीषा टेटे
द्वितीय वर्ष "ब"

विज्ञान प्रदर्शनी

"जीवन विज्ञान के प्रयोग जैसे है, जितनी बार प्रयोग करेंगे पहले से बेहतर सफलता मिलेगी"

हमारे महाविद्यालय में इस वर्ष भी और वर्षों की भांति विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। हरेक विद्यार्थी अपनी-अपनी कला के द्वारा परियोजनाओं का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी में छात्रों को विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से जुड़े तथ्यों और आविष्कारों के बारे में सीखने को मिला तथा छात्रों में टीम वर्क और सहयोग की भावना विकसित हुई। हमें अनेक प्रकार के कार्यों तथा कामों को सीखने, सोचने तथा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यह हमारे लिए बहुत ही फायदेमंद रहा। हमने अपने दलों में मिलजुल कर काम किया और उस दिन को सफल बनाया। यह मेरे लिए बहुत ही अच्छा अवसर था।

अलका खाखा
द्वितीय वर्ष "ए"

विज्ञान प्रदर्शनी

विज्ञान एक कला है जिससे छात्रों में नई सोच एवं नयी मानसिकता विकसित होती है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 28 फरवरी को महाविद्यालय में विज्ञान एवं आर्ट एंड क्राफ्ट प्रदर्शनी कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसके मुख्य अतिथि डॉ. राकेश पाण्डेय थे। जिन्होंने हमें विज्ञान की नई-नई ज्ञान से अवगत कराया। प्रदशनी का शुभारंभ मुख्य अतिथि द्वारा फीता काटकर किया गया। सभी प्रशिक्षुओं ने अलग-अलग समूहों में बंटकर अपनी कला का प्रदर्शन किया। जिसमें हमारा टॉपिक था 'प्लास्टिक पुनर्चक्रण' जो कि हमारे वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

हम सभी ने इसके लिए काफी मेहनत किया और मॉडल तैयार किया। जिसके द्वारा छात्रों को 'प्लास्टिक पुनर्चक्रण' की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया।

रेशमी टोप्पो
द्वितीय वर्ष "ए"

विज्ञान प्रदर्शनी

28 फरवरी विश्व विज्ञान दिवस इस दिन हमारे महाविद्यालय में विभिन्न प्रकार की कलाओं का प्रदर्शन हुआ। जैसे- आर्ट एंड क्राफ्ट, हाथों की कला और विज्ञान से संबंधित कलाएं। विज्ञान ही एक ऐसी कला है जिसमें सोच-विचार के साथ प्रयोग प्रदर्शन अहम् होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति के अंदर छिपे गुण व हुनर बाहर आते हैं। इसी हुनर के साथ सभी प्रशिक्षुओं ने अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया। मैं समूह संख्या एक में थी और हमारा प्रकरण था चंद्रयान-3, जो कि बहुत ही रुचिकर व उत्साहवर्धक था। मेरे लिए इस प्रोजेक्ट का सबसे खास अनुभव रहा कि शुरुआत में मैं शिक्षकों व बच्चों के सामने प्रोजेक्ट का विवरण देने के लिए बहुत ही डर रही थी। मन में घबराहट थी, लेकिन मैं हार नहीं मानी। मन को शांत करते हुए मैंने ठाना कि मैं कर सकती हूँ, आगे बढ़ी और मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास आ गया कि मैं बच्चे तो क्या शिक्षकों के सामने भी हमारे प्रोजेक्ट का विवरण दी। विज्ञान हमें हमारे जीवन के लिए बहुत कुछ शिक्षा दे जाती है। स्वयं में आत्मविश्वास लाना, अपने अंदर छिपे गुणों को पहचानना जिसको कि हम वातावरण में स्वतंत्र प्रयोग करते हैं। जिंदगी भी विज्ञान के प्रयोग जैसी ही है, जितनी बार प्रयोग करेंगे, उतना ही बेहत्तर होगा।

दिव्या लकड़ा
द्वितीय वर्ष "ब"

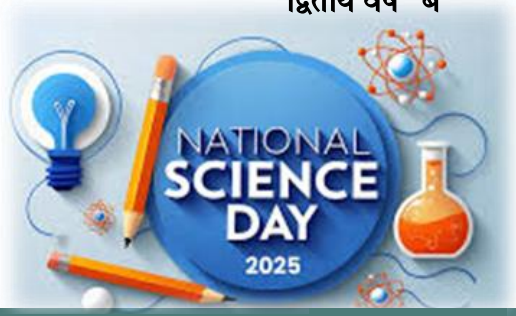

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
MOON

HAPPY FEAST
AD MAJOREM DEI GLORIAM

पवन ऊर्जा

PRIMARY TEACHERS' EDUCATION
COLLEGE
C. V. RAMAN

महाविद्यालय परिवार की नारी शक्तियाँ

मुस्कुराकर, दर्द भूलकर, बना लेती है दुनिया सारी।
अपनों का जीवन और घर रोशन करने वाली वो शक्ति है, एक नारी।।

आज का यह शुभ दिन हमारे लिए बहुत ही खास है। आज हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मना रहे हैं, जो रूस में 1917 की क्रांति के दौरान महिलाओं ने बड़ी संख्या में प्रदर्शन किया। उन्होंने युद्ध के खिलाफ आवाज उठाई और बेहत्तर अधिकारों की मांग की। महिलाओं के इस आंदोलन ने वहाँ की सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया और उन्हें वोटिंग का अधिकार मिला। इस तारीख को महिला दिवस के रूप में चुना गया।

आज का दिन हमें न केवल महिलाओं के संघर्ष और उपलब्धियों की याद दिलाता है, बल्कि उनके सम्मान और समानता एवं विकास की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों पर भी विचार करने का अवसर प्रदान करता है। हम सभी जानते हैं कि किसी परिवार में एक नारी के न होने से कितना कष्टदायक स्थिति होती है। इसलिए नारी हमारे समाज की रीढ़ है और उनके बिना हमारा समाज अधूरा है।

रोशन मिंज
द्वितीय वर्ष 'ब'

प्रेम है अधूरा औरत के बिना
मान है अधूरा औरत के बिना
घर है अधूरा औरत के बिना
संसार है अधूरा औरत के बिना
महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

"कोमल है कमजोर नहीं
शक्ति का नाम ही नारी है
जग को जीवन देने वाली
मौत भी तुझसे हारी है।

कोमलता, प्रेम और त्याग की मूर्ति, शक्ति की अवतार नारी को शत्-शत् नमन।

हम सभी जानते हैं कि प्रतिवर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस दिन महिलाओं के सम्मान में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। महिलाओं की उपलब्धियों का गुणगान किया जाता है, उनकी समस्याओं पर विचार किया जाता है और प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एक खास थीम के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष 2025 के लिए थीम है Accelerate Action (एक्सेलेरेट एक्शन), जिसका अर्थ है तेजी से कार्य करना। यह थीम लैंगिक समानता प्राप्त करने, प्रगति करने, प्रगति की धीमी गति को संबोधित करने, तेज करने और दुनियाभर में महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने की दिशा में निर्णायक कदम उठाने की तत्काल आवश्यकता पर ज़ोर देती है।

आज भी हमारे देश में छोटी सी बच्ची से लेकर अधेड़ उम्र की औरत तक सुरक्षित नहीं है। आज महिलाओं के साथ अनेक अपराध हो रहे हैं। कितनी महिलाएं दहेज के लिए जिंदा जला दी जाती हैं। कितनी बच्चियों को कोख में ही मार दिया जाता है। शिक्षा से वंचित रह जाती है। हमारे देश में इसके लिए कानून बने हैं लेकिन उन क़ानूनों का पूरी ईमानदारी एवं कड़ाई से पालन नहीं हो पाता है।

बेटी को चाँद जैसा मत बनाओ
कि हर कोई घूर-घूर के देखे
बेटी को सूरज जैसा बनाओ
ताकि घूरने से पहले नजरें झुक जाय।

अगर महिला दिवस को सार्थक करना है तो कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। महिलाओं को शिक्षा, स्वतंत्रता, समानता का अधिकार दिया जाय। साथ ही, महिलाओं की सुरक्षा के लिए ठोस प्रबंध किया जाय। तभी महिलाएं नीडर होकर देश के विकास में अपना योगदान दे पाएंगी।

हमारा यहाँ महिला दिवस के अवसर पर जमा होना हमें महिलाओं की शक्ति, संघर्ष और योगदान को याद करने का अवसर प्रदान करता है। आज महिलाएं न केवल घर की बागडोर संभाल रही हैं, बल्कि नौकरी, व्यापार, राजनीति, शिक्षा, खेल और यहाँ तक की अन्तरिक्ष में भी उन्होंने अपनी योग्यता के झंडे गाड़ दिये हैं। महिलाओं के सामने मुश्किलें हैं, बाधाएँ हैं, फिर भी पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलकर आगे की ओर बढ़ रही हैं।

तू है आज की नारी
अब तू नहीं रही बेचारी
करती है तू सारे काम
नारी शक्ति तुझे सलाम।

महिला दिवस का महत्व केवल एक दिन तक सीमित नहीं, बल्कि यह एक संदेश है जो हर दिन महिलाओं के अधिकारों और सम्मान की रक्षा करने की प्रेरणा देती है।

व्याख्याता
उषा गुड़िया

संत योसेफ, धन्य कुँवारी मरियम का वर का महोत्सव

संत योसेफ, धन्य कुँवारी मरियम का वर का महोत्सव पूरी कलीसिया के साथ मिलकर मनाया जाता है। संत योसेफ का नाम संतों में सबसे ऊपर है। क्योंकि जिस प्रकार माता मरियम को उनकी धार्मिकता, आज्ञाकारिता और विनम्रता के कारण ईश माता होने का गौरव प्राप्त हुआ, उसी प्रकार संत योसेफ को भी उसकी धार्मिकता, आज्ञाकारिता और विनम्रता के कारण ईश पुत्र येसु मसीह के पालक पिता होने का गौरव प्राप्त हुआ। अपने ईश्वरमय और आदर्श जीवन के कारण आज संत योसेफ कलीसिया का संरक्षक संत है। कई संस्थानों और धर्म संघों का संरक्षक संत है। संत योसेफ हमारे इस संस्थान के लिए, हम सबों के लिए कई रूपों में आदर्श है और आज हम उसके चरणों में आते हैं ताकि हम उनके संरक्षण में उनकी तरह अनेक बातों में आदर्श इंसान बन सकें। हम अपने लिए और इस संस्थान के लिए प्रार्थना करें कि हमें संत योसेफ के संरक्षण में ईश्वरीय आशीष और कृपा प्राप्त हो। संत जोसेफ को उनके पाँच गुणों के द्वारा हम उन्हें गहराई से समझ सकते हैं-

1. संत योसेफ, धन्य कुँवारी मरियम का वर

संत जोसेफ धन्य कुँवारी मरियम का सच्चा वर, आदर्श वर या पति था। वह कुँवारी मरियम के सुख-दुःख का सच्चा साथी था। कुँवारी मरियम पवित्र आत्मा से गर्भधारण की। जब जोसेफ को पता चला कि वह पेट से है, उसे त्यागने की सोचने लगा तो प्रभु के दूत की मदद से ईश्वर ने उसे शक नहीं करने का विश्वास दिलाया। उन्होंने ईश्वर की बातें सुनी और उन्हें अपनाया। इस प्रकार वह कुँवारी मरियम का सच्चा साथी, विश्वासी, रक्षक और सहायक बना।

2. पवित्र परिवार का अगुआ

संत जोसेफ पवित्र परिवार का अगुआ बना। हमें भी पवित्र परिवार बनाना है। धर्म के नियमों का पालन करना है। बच्चों को धार्मिक शिक्षा देना है। पवित्र परिवार का अगुआ जहाँ येसु का जन्म और पालन-पोषण हुआ। पवित्र परिवार की देख-भाल करना है। परिवार में सभी दुःख तकलीफों को मिलकर सहना, दूर करना है। ईश्वर की मुक्ति योजना में सहभागी होना है।

3. आदर्श यात्री:

हम सभी इस दुनिया में एक यात्री हैं, आशा के तीर्थयात्री | संत योसेफ का जीवन यात्रा बहुत ही कठिन था। उन्होंने बेथलेहेम और मिश्र देश की कठिन यात्रा की। साथ ही वहाँ से वापस नाजरेथ आये। उन्होंने आशा और भरोसा रखा। बारह वर्ष की उम्र में येसु का मंदिर में बिछुड़ना और तीसरे दिन मिलना। समझना है कि तीन दिनों की यात्रा वे कर चुके थे, फिर वहाँ से वापस आकर येसु को पाते हैं।

4. मेहनतकश लोगों का आदर्श

संत योसेफ मजदूरी करनेवालों का आदर्श है। वे एक बढ़ाई का काम करते थे। हम जानते हैं कि बढ़ाई का काम उस समय बहुत ही कठिन और धैर्यपूर्ण काम था। आज की तरह मशीन उपलब्ध नहीं थे। उन्होंने काम को ही पूजा माना और मेहनत की।

5. धार्मिता का आदर्श

उन्होंने यहुदी धर्म के नियम का पालन किया। ईश्वर की योजना को समझना और उसकी इच्छा पर चला। उनमें विनयशीलता, मौनशीलता या शांतिप्रिय और विनम्रता भरी थी। साथ ही विवेक, भक्ति और श्रद्धा से पूर्ण थे। संत जोसेफ के गुणों में विश्वास, आशा, ईश्वर के प्रति प्रेम, दया, आज्ञाकारिता, गरीबी, शुद्धता, विनम्रता, कर्तव्यनिष्ठा सहज ही झलकता है। धर्मनिष्ठ, धर्मात्मा, विश्वस्त तथा विचारशील सेवक थे संत योसेफ।

फा. अनिल आइंद

रेक्टर SSC

HAPPY FEAST

HAPPY FEAST

3 दिवसीय कार्यक्रम का अनुभव

"वो कहते हैं गुजरे हुए लम्हें कभी लौट कर नहीं आते उसी प्रकार यह तीन दिवसीय कार्यक्रम आकर चला भी गया जो कभी अब लौट कर नहीं आएगा। जब मुझे इस कार्यक्रम के बारे में पता चला मैं बहुत उत्सुक हो गई थी, क्योंकि आचार खाना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

पहले दिन में सि० अलमा ने हमें आर्ट एण्ड क्रफ्ट से जुड़े हुए कई प्रकार की चीजें बनाना सिखाया। फिर दूसरे दिन फीनाइल, मोमबत्ती और आचार बनाने सीखाया। उस दिन बारीश बहुत ज्यादा और तेज हो रही थी, जिसके कारण दिक्कत हुई। जिन्हें आग के माध्यम से आचार बनाना था लेकिन मैं और मेरे ग्रुप के लोगों को आग की आवश्यकता नहीं थी इसलिए हमने बड़े मस्ती से आचार बनाया। तीसरे दिन मसरूम की खेती करना और कुछ जड़ी-बूटी के बारे में हमें अच्छी-अच्छी जानकारी दी।

तीन दिवसीय कार्यक्रम मेरे लिए बहुत नया था। इस प्रकार का अनुभव मुझे कभी नहीं मिला था। हम सब ने एक-दूसरे की मदद करते हुए, एक-दूसरे का आचार चखते हुए कार्यक्रम को अंजाम दिया। मुझे सि. के द्वारा सिखाई गई सभी बातों को तो नहीं सीख पाई लेकिन आचार जैसे सेशन को अच्छी प्रकार सीखी, जिसका मैं भविष्य में लाभ जरूर उठा पाऊंगी। सि. अलमा गुलाब, बड़ा को पूरे मन और हृदय से मैं व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद देती हूँ कि हमारे साथ मिलकर उन्होंने इतने अच्छे-अच्छे व्यावसायिक पदार्थों को बनाना सिखाया जिसका उपयोग हम भविष्य में कर सकें।

वतिस्ता यादव
प्रथम वर्ष 'अ'

कौशल विकास सेमीनार का अनुभव

इस चार दिवसीय कौशल विकास सेमीनार का इंतजार मैं बहुत ही बेसब्री से कर रही थी क्योंकि हमारे सिनियरस प्रायः इसके बारे में बताया करते थे। तो मुझे ऐसा लगता था कि वो दिन मेरे लिए कब आएगा। देखते ही देखते वह सीखने का समय आ गया और मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। हमारा चार दिवसीय कौशल विकास सेमीनार दिनाँक 20/03/25 से 24/03/25 बहुत ही लाभदायक था। इन दिनों हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। चारों दिन के लिए तीन वक्ताओं को बुलाया गया था जिन्होंने हमारे लिए अलग-अलग टॉपिक पर क्लास दिये। जिनमें से मुझे सबसे अच्छा सि० अलमा का क्लास लगा क्योंकि उनके माध्यम से हमने अनेक तरह की चीजों को बनाना सीखा। जैसे मोमबत्ती बनाना, पेपर से फूलों का डिजाइन काटना, फिनाइल बनाना, मशरूम की खेती करना तथा अनेक तरह का आचार बनाने सीखे जो कि हमारे लिए एक शिक्षक बनने के साथ-साथ एक अलग से रोजगार का भी जरिया है जिसे हम खुद कर सकते है तथा दूसरों को भी सिखा सकते है ताकि हमारे गाँव घरों की गरीबी कम हो सके।

तनवी केरकेट्टा
प्रथम वर्ष 'अ'

कौशल विकास सेमिनार

20 मार्च की सुनहरी सुबह को,
आगमन सि. अलमा का पाकर,
बदल–सा गया माहौल हमारे परिसर का,
हौले-हौले से स्वागत किया मौसम।

कागज की दुनिया में आकर
पढ़ना छोड़ हमने काटना सीखा।
हँसते -खेलते मिल-जुल कर,
ढेरों आकृतियाँ सजावट की बनायी हमने।

दुनिया को प्रकाशित करने वाली,
मोम का हमने सीखा घड़ बनाने |
न जाने कौन-कौन सी मिलावट से,
सामने हमारे बन गया खुशबूदार फिनाएल।

उठा कर लाये ढेरों सब्जियाँ और फल
वर्षा की बूँदों के साथ करते हुए मस्ती,
सीखा हमने मशालेदार आचार बनाने।
गांवों की दूर-दूर खेतों में खोजते मशरूम,
सीखा हमने उगाना घर के अन्दर |

रंग बिरंगी फूलों, पत्तियों, और जड़ से,
बड़ी काम की बात जानी हमने |
वाकई संविधान है आत्मा सभी हम भारतीयों की,
जिससे थे हम अनजान कितने|

बैठे तो है हम इस वक्त कक्षा में,
लेकिन है मन खोया उन्हीं यादों में।
आता ख्याल मन में कभी-कभी
काश! कि वक्त थम-सा जाता वही।

अंशु टोप्पो
प्रथम वर्ष 'अ'

कुछ नया सीखने की जोर

खट्टी-मीठी जिज्ञासा के साथ
चल पड़े कॉलेज की ओर
प्रकृति ने तो नहीं दिया साथ
इस दिन बारिश थी जोर

देखकर बारिश मन नाचे जैसे मोर
कैसे बनाया जाए आचार चिंता सताये जोर
चल पड़े सभी हॉस्टल की ओर
तैयारी में लग गए सभी ओर

ग्रुप था सबका अलग-अलग
सीखना था कुछ अलग-अलग
चूल्हा बना सबका अपना-अपना
आचार बनाने लगे सब अपना-अपना

मशाले पीसने के लिए लगी थी पंक्ति लंबी
सबके पास समय की थी पाबंदी
सिलपट्टा की भाव थी चढ़ी

बनकर तैयार थी आचार सबकी
चेहरे पर थी मुस्कान सबकी

प्रिस्मा टोप्पो
प्रथम वर्ष 'अ'

तीन दिवसीय सेमिनार

हमारे महाविद्यालय के सभी प्रशिक्षाणार्थियों का तीन दिवसीय कार्यक्रम सि. अलमा गुलाब बड़ा के द्वारा लिया गया। हमारा सही मार्गदर्शन किया और हमने बहुत कुछ सीखा। मुझे इन तीन दिवसीय कार्यक्रम में सबसे अच्छा, आचार और मोमबत्ती बनाने में लगा। भारी बारिश में भी हमने आचार बनाना सीखा। तैयार होने के बाद हमने सबका आचार का आनंद उठाया।

आचार के साथ-साथ हमने मोमबत्ती, फ़िनाइल बनाना, मशरूम उगाना, आर्ट एंड क्राफ्ट बनाना सीखा। मोमबत्ती बनाना बहुत ही आसान लगा।

निशि तिर्की
प्रथम वर्ष 'अ'

तीन दिवसीय सेमिनार

हमारे महाविद्यालय में प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थीयों के लिए तीन दिवसीय सेमिनार आयोजित किया गया था। इसमें सि. अलमा ने हमें आर्ट एंड क्राफ्ट, आचार, शरबत, मोमबत्ती फ़िनाइल बनाने एवं उनसे जुड़ी कुछ बाते और जड़ी बूटियों के बारे बताई।

पहले दिन कागज से फूल, बॉल, और तारा बनाने सिखाया गया। इसमें सबसे अधिक अच्छा मुझे बॉल लगा क्योंकि इसे बनाना सरल था। मैंने ठान लिया था कि इसे में क्रिसमस के समय में सजावट के रूप में घर में बनाऊँगी।

दूसरे दिन मोमबत्ती, फिनाइल और आचार, शरबत, जेली, सोस बनाने सिखाया गया। मोमबत्ती और फिनाइल बनाना बहुत ही आसान था। इसे मैं किसी दिन जरूर बनाऊँगी। हमारे ग्रुप को शिमला मिर्च का आचार बनाना था जिसे हमने बहुत ही परिश्रम कर बनाया। मौसम खराब होने के कारण बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा लेकिन अंत में सब अच्छा से संपन्न हुआ।

तीसरे दिन मशरूम बनाने सिखाया गया और जड़ी बूटियों के बारे जानकारी दी गई। सेमिनार में सिखाये जाने वाली हर एक चीजों को मैंने बहुत ही ध्यानपूर्वक देखा और सीखा और इसमे अपनी सहभागिता दिखाई। हम सभी बहुत ही धैर्यपूर्वक सहानुभूति के साथ एक दूसरे की सहायता करते हुए इसका आनंद लिया।

अतः यह तीन दिवसीय सेमिनार हमारे भावी जीवन में बहुत ही सहायक होगा और इसे हम रोजगार के रूप में अपना सकते हैं।

लीमा तिर्की
प्रथम वर्ष 'अ'

त्रिदिवसीय सेमिनार

दिनांक 20/03/2025 दिन गुरुवार को हमारे महाविद्यालय में त्रिदिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें इस सेमिनार के मुख्य अतिथि सि० अल्मा गुलाब बाड़ा को सभी प्रथम वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा स्वागत किया गया। इसके बाद सि० ने हम सबों को शुभ संदेश दिया। इसके बाद कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

प्रथम दिन सि० अल्मा गुलाब बाड़ा ने हमलोगों को आर्ट एवं क्राप्ट के बारे में बताई। जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार के कागज से फूलों को बनाना सिखाई। जो मेरे लिए नया था । शुरुआत में मैं अच्छी तरह से नहीं बना पाया। लेकिन दोबारा प्रयास किया तो पहले की तुलना में बेहतर बनाया। जो मुझे बहुत अच्छा लगा। यह मेरे लिए नया ज्ञान था। मुझे बहुत ही खुशी का अनुभव हुआ |

दूसरे दिन पहली बेला हमलोगों को मोमबत्ती बनाने के बारे में बताई। मोमबत्ती बनाने के लिए आवश्यक सामग्रियों की जानकारी दी गई। हमलोगों ने विभिन्न आकार के मोमबत्ती बनाए। जो देखने में बहुत ही आकर्षक लग रहे थे। उसके बाद दूसरी बेला अचार और चटनी बनाने के लिए सिखायी।। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को कई अलग-अलग समूहों में बांटा गया था। सबको अलग-अलग प्रकार के आचार एवं चटनी बनाने को मिला था। मेरे समूह को लहसून का आचार बनाने को मिला था। हमने मिलकर लहसुन का आचार बनाने की विधि को सीखा। लेकिन इस दिन बारिश होने के कारण हमलोगों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। सभी समूहों के आचार और चटनी को चखने का अवसर मिला । कुछ समूहों के आचार बहुत ही अच्छा लगा।

तीसरे दिन हमलोगों को फिनाइल एवं मशरूम उगाने के बारे में बताई। फिनाइल को बनाने के लिए विभिन्न सामग्रियों को मिलाने का उचित तरीका बताई। जो हमारे लिए बहुत ही उपयोगी साबित हुआ। उसके बाद मशरूम उगाने के बारे में बताई। एक समूह को मशरूम उगाने को मिला था। उन्होंने प्लास्टिक में पुआल डाल कर मशरूम के बीज को डाला। यह हमारे लिए एक अनुभव था जो पहले कभी नहीं हुआ था।

सिगिन मुंडा
प्रथम वर्ष 'अ'

Pickle Making

This was the first experience of college life in which I prepared pickle in a group. This workshop was very useful for me because I learnt many skills. One of them was how to make pickle. We made it under the guidance of Sr. Alma Gulab Bara. We used the quantity of incredients and materials as per her instructions. Since it was raining, we made the pickle in boys' hostel. We arranged the wooden stove to fry the mushroom. And thus, we were successful in making the mushroom pickle. Once it was ready we gave it to other groups to taste it. We also tasted the pickles of other groups. So, the workshop was very interesting and knowledgable. It will definitely help us to become self dependent in future

Prince Kujur

1st year 'A'

An experience on home science seminar

On 20th March, Thursday, immediately after college day function we had the most valuable and significant seminar on various skills which are very relevant in today's context. All the skills were demonstrated by Sr. Alma Gulab Bara. It was really a life building seminar.

It was my first experience to attend such a valuable workshop. It was completely a new learning for me. From the first day to the last I was very curious and active participant of the workshop. Most of the skills were unfamiliar to me. I found each and every skill very interesting. So, I enjoyed a lot and learnt a lot as well.

Astonishingly inspite of a bad weather I observed that each and every person was energetic and curious to learn. They were very committed and cooperative in their groups. This was one of the best events of my life.

Pawan Kujur

1st year 'A'

तीन दिवसीय कौशल विकास

चाँद चाँदनी से होती है सितारों से नहीं, हर नई सुबह नए व्यक्ति के साथ शुरू होती है। इस तीन दिवसीय कौशल विकास सेमिनार में बहुत ही अधिक उत्साहित थी। मैं अपने कौशल को दूसरों के समक्ष, चाहे जानती थी या नही, कम से कम सीखने का तो बहुत बड़ा अवसर मिला। हर नई सुबह नए मेहमान से मुलाकात जरूर होती थी और वे हमारे जीवन संबंधित बातों को बताते और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देते थे। मुझे यही शिक्षा मिली कि जीवन में कभी सफलता और असफलता दोनों की प्राप्ति होती है इसलिए हमें घबराना नहीं, हर कठिनाईयों को पार करके अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना है। किसी भी कार्य को संगठन में करने से मुझे यही शिक्षा मिली कि अपने विचारों को दूसरो के विचारों के साथ कैसे ताल-मेल बैठा कर कार्य को पूरा करना है। आपसी समझौता के साथ एक दूसरे का सहयोग करना है।

रीना तिग्गा

प्रथम वर्ष 'अ'

कानूनी शिक्षा

फा. सैयजू थोमस के द्वारा 24-03-2025 को हमारे महाविद्यालय में कानूनी शिक्षा सेमिनार रखा गया। इसमें मुझे कानून के बारे में आधारभूत जानकारी प्राप्त हुई कि किस तरह से केस दर्ज होता है तथा अलग-अलग अपराध के लिए अलग-अलग सजा होती है। उन सजाओं को अलग कानून के किताबों में दर्ज किया गया है तथा उन्हीं किताबों को सहायता से एक वकील अदालत में अपना पक्ष रखता है तथा जीतता या हारता है। POSCO act से मुझे यह पता चला कि अपने जीवन में किन-किन बातों एवं कार्यों से दूर रहना है और उन कार्यों को करने से हमें क्या-क्या परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

आनंद तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

कानूनी शिक्षा का सेमिनार

फा. सैयजू थोमस ने अपराध से जुड़े नियमों, क़ानूनों की जानकारी लेने, पता करने या जानने के लिए हमें कुछ किताबों के विषय में बताया जो संविधान से जुड़े हैं। जिसे पढ़कर बहुत सारी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। उन किताबों को पढ़ने के लिए हमें प्रोत्साहित किया। इस अपराध भरी दुनिया में हमें क़ानूनों एवं नियमों की जानकारी रखना बहुत ही जरूरी है, क्योंकि किसी भी पल कुछ भी होने पर हम तुरंत कुछ करने में सक्षम हो सकते हैं। कई ऐसे नियम-कानून हैं जिससे मैं अभी तक परिचित नहीं हूँ। इस अवसर के कारण ही मैं बहुत सारे नए-नए नियमों, क़ानूनों एवं अपराधों तथा इनके कार्यों को समझ पाया।

प्रणीत तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

एक दिवसीय सेमिनार

नियम कानून हमारे जीवन को नियमित रूप से संयमित करने में हमें सहायता प्रदान करती है। अतः इस एक दिवसीय सेमिनार में फा.सैयजू थोमस ने हमें भारतीय अधिकारों एवं कर्तव्यों तथा अदालत और उससे जुड़े नियम-कानून के बारे में हमें जानकारी दी। इस सेमिनार में भाग लेकर मुझे अदालत से जुड़े नियम-कानून के बारे में जानकारी प्राप्त हुई।

अंजना सोरेंग
प्रथम वर्ष 'ब'

जीवन एक संघर्ष

जीवन एक संघर्ष है और संघर्ष का सामना करना एक कला है। इस कला को निखारने के लिए हमें फा. राजेन्द्र टेटे की प्रेरणादायक बातों को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हम सचमुच में भाग्यशाली थे कि फा. ने 3 घंटे में ही हमारे जीवन को सफल बनाने के मूल मंत्रों को बताया और स्वयं के संघर्ष द्वारा हमें प्रेरित किया।

हर सफल व्यक्ति के पीछे उसकी कड़ी मेहनत, लगन, त्याग और समर्पण का हाथ होता है, परंतु सफल व्यक्ति को भी सफल बनने के लिए असफलता का कड़वा रस चखना ही होता है। व्यक्ति को जीवन में असफलता और हार मिलती ही है। बस उस असफलता और हार को एक सीख के रूप में ग्रहण करना है और सफलता की राह में निरंतर आगे बढ़ना है।

उनकी बातों से मुझे यह संदेश मिला कि जीवन में हर व्यक्ति अपने कदमों तले सफलता पाना चाहता है। परंतु सफलता केवल उनके कदमों को चूमती है जो संघर्ष करते हैं। अतः सफलता पाने के लिए संघर्ष करना ही जीवन का एक बहुमूल्य उद्देश्य है।

अनुजा नेहा पन्ना
प्रथम वर्ष 'ब'

व्यक्तित्व विकास सेमिनार का अनुभव

फा. राजेन्द्र टेटे के द्वारा हमें जीवन के लिए उपयोगी विभिन्न प्रकार की अच्छी बातों को बताया गया, जो हमारे आने वाले जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होंगे। उन्होंने हमें जीवन में किस प्रकार लक्ष्य निर्धारण करना है और उस लक्ष्य को पाने के लिए किस प्रकार मेहनत करना है उसके बारे में बहुत ही अच्छी जानकारी प्रदान की।

संजय आइंद
प्रथम वर्ष 'ब'

व्यक्तित्व विकास सेमिनार

फा. राजेन्द्र टेटे का प्रवचन मुझे बहुत अच्छा लगा, क्योंकि उन्होंने हमारे भविष्य में होने वाले तथा दिनचर्या में हो रही घटनाओं से संबंधित किताबी ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान से भरी बातों को बताया। जिसे सुनकर लग रहा था कि मैं तो इस दुनिया से बहुत पीछे हूँ। फा. ने हमें समझाने की कोशिश की कि हमें जिंदगी को किसी उद्देश्य से जीना चाहिए। सोच समझकर लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए एवं उसमें काम करना चाहिए। हमें निर्णय लेना चाहिए, परंतु सही निर्णय लेना चाहिए तथा प्रार्थना भी करते रहना चाहिए, क्योंकि सफल होने के लिए मेहनत ही नहीं बल्कि ईश्वर की आशीष बहुत जरूरी होता है। हमें अच्छे विचार रखनी चाहिए तथा प्रत्येक दिन सीखना चाहिए। अच्छे लोगों की संगति में रहना चाहिए जिससे हमें अच्छी तथा गुणवत्ता भरी बातें सीखने को मिलेगी। हमें अच्छा सोच रखना चाहिए क्योंकि हमारा एक अच्छा सोच हमारा भविष्य बदल सकता है।

रजत बागे
प्रथम वर्ष 'ब'

पुरी बीच

समुद्री किनारा का नजारा ही कुछ और होता है। जहाँ भी देखो बालू और पानी ही पानी। लहरों का झूमते हुए आना और उसी ताल में झूमते हुए वापस चले जाना काफी रोमांचक लग रहा था। देखते ही देखते मैं भी समुद्र की लहरों में समा गया। लहरों की मासूमियत देखकर मुझमें दया की भावना जागृत होने लगी। वे मुझे अपने साथ ले जाने के लिए बड़े उतावले हो रहे थे। जब भी लहरों की झुंड झूमती हुई आती, मैं उनके ऊपर से डोलफ़िन की तरह छलांग लगाता। यही सिलसिला लगातार घंटों तक चलता रहा। अंततः किसी तरह लहरों के चंगुल से मैं बच निकला।

अंकित कुल्लू
द्वितीय वर्ष 'ब'

पुरी गोल्डन बीच का मेरा अनुभव

यह शहर अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। जब हम पुरी के शैक्षिक भ्रमण पर पहुंचे, तो सबसे पहले हम पुरी के गोल्डन बीच पर गए। जैसे ही मैं तट के करीब पहुंची, समुद्र की लहरों की गर्जना कानों में संगीत की तरह गूंज रही थी। सुनहरे रेत पर नंगे पाँव चलना एक अलग ही एहसास था और ठंडी समुद्री हवा तन-मन में ताजगी भर रही थी। जैसे ही मैं पानी के अंदर गयी तेज लहरों के कारण मैं पानी में गिर गयी। फिर समुद्र की लहरों में हम सभी ने खूब मस्ती किया। मस्ती का परवान इतना चढ़ा कि कपड़े के फट जाने का भी गम नहीं रहा। कुछ सुनहरे पलों को कैमरे में कैद कर सुरक्षित रखा।

इस प्रकार मैं प्रकृति की सुंदरता का आनंद ली और समुद्र की लहरों के पीछे छिपे वैज्ञानिक तथ्यों को समझी। मेरे लिए पुरी गोल्डन बीच अनुभव स्मरणीय और सुकून भरा रहा।

सोनाली एक्का
द्वितीय वर्ष 'ब'

शैक्षणिक भ्रमण

पुरी समुद्र तट का अनुभव मुझे आज भी मेरे मन को आनंदित कर देता है। समुद्र की लहरें मानो मेरे मन को मोह लिया है। लगता है दिनभर मैं लहरों से बातें करूँ तथा उनसे खेलती रहूँ।

मैंने पुरी में अनेकों मंदिरों का दर्शन किया। इस तरह मुझे मंदिरों के इतिहास के बारे जानकारी प्राप्त हुई। जिसे मैं अपने किताबों में पढ़ी थी, उसे वास्तविक रूप से दर्शन करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। किताबों में देखा हुआ और उसे वास्तविक रूप में देखने में बहुत अंतर है। यह मेरे लिए खास अनुभव रहा।

साथ ही, हम सभी प्रशिक्षणार्थियों ने पूरे शैक्षणिक भ्रमण को अनुशासित ढंग से पूरा किया। यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा। मुझे डर था कि कहीं हमारा बैच भी कुछ गलत कार्यों से महाविद्यालय का नाम खराब न कर दे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हमने अनुशासन में रहकर अच्छी सीख को प्रस्तुत किया। आशा करती हूँ कि जीवन के सभी क्षेत्रों में हम सभी इसी तरह अनुशासन में रहेंगे।

असरीता एक्का
द्वितीय वर्ष 'ब'

शैक्षणिक भ्रमण

इस भाग दौड़ के जीवन में काम करते-करते अक्सर हम मानसिक और शारीरिक रूप से थक जाते हैं। खुद को तरोताजा करने के लिए भ्रमण करना बहुत ही जरूरी है। शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक भ्रमण करना बहुत ही आवश्यक है। इस वर्ष हम सभी शैक्षणिक भ्रमण के लिए पुरी गए थे। यह मेरा पहला अनुभव था कि इतने सारे सहपाठियों के साथ कहीं घूमने जाएँ। मैं बहुत ही उत्साहित था।

समुद्र को देखकर मैं खुद को एक सेकेंड भी रोक नहीं सका। तुरंत दौड़कर समुद्र में घुस गया और मेरा पूरा शरीर नमकीन हो गया। समुद्र में नहाते इतना मजा आया कि एक घंटा कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। इसके साथ हमने बहुत सारे मंदिरों का दर्शन किया। पुराने मंदिरों की कलाकृतियाँ बहुत अच्छे थे जिन्हें देखकर मैं मंत्रमुग्ध हो गया। मंदिर का एक-एक पत्थर सुंदर कलाकृतियों से तराशा हुआ था। इस वैज्ञानिक युग में अपने हाथों से ऐसे आकृति प्रदान करना असंभव सा लगता है। वहाँ के मनमोहक वादियों से ऐसा लगाव हो गया कि दिल वापस आने को तैयार ही नहीं हो रहा था।

सच में यह भ्रमण मेरे लिए रोमांस से भरा था। हमने खुशियाँ मनाने के लिए कोई भी पल व्यर्थ जाने नहीं दिया, क्योंकि हमें पता था कि ये जिंदगी और अवसर दुबारा नहीं मिलने जा रहा था।

दीपक बिलुंग
द्वितीय वर्ष 'ब'

शैक्षणिक भ्रमण का अनुभव

हमारे महाविद्यालय की ओर से द्वितीय वर्ष के सभी प्रशिक्षणार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण के लिए उड़ीसा 'पुरी' लिया गया। यह मेरे जीवन का प्रथम शैक्षणिक भ्रमण था मैं बहुत ही खुश थी। सबसे पहले हमलोगों को गोल्डन बीच लिया गया। समुद्र के जल में प्रवेश करना मेरे लिए पहली बार था। दूर से देखने पर समुद्र हरे-भरे पेड़-पौधों के समान प्रतीत हो रहा था। मैं अपने सहपाठियों के साथ समुद्र में खूब मस्ती की। मुझे बहुत ही अच्छा लगा।

इसके बाद हमलोगों को जगनाथ मंदिर लिया गया। मैं वहाँ जाने के लिए बहुत उत्सुक थी, क्योंकि मैं गिरजाघर के अलावा किसी भी धर्मों के मंदिर में प्रवेश नहीं की थी। मुझे जगनाथ मंदिर में प्रवेश कर लोगों का भगवान के प्रति श्रद्धा देखकर बहुत अच्छा लगा। यह मेरे लिए प्रेरणादायक रहा।

नन्दनकानन जू में घूमकर सभी प्रकार के जंगली जानवरों, जलीय जीवों को देखकर बहुत अच्छा लगा। बहुत सारे जीव-जन्तु मेरे लिए नए थे। शैक्षणिक भ्रमण के माध्यम से मुझे इन सब को देखने का मौका मिला। इस प्रकार मेरा शैक्षणिक भ्रमण का अनभव बहत ही अच्छा रहा।

शैक्षणिक भ्रमण

हर मंजिल कि एक पहचान होती है
और हर सफर कि एक कहानी!

दिनांक 20 मार्च 2025 को हम शैक्षणिक भ्रमण के लिए अपने हॉस्टल प्रांगण से लगभग 3 बजे शाम को निकले थे। मैंने पहली बार अपने सहपाठियों के साथ इतनी दूर की यात्रा की।

न मंजिल के लिए न रस्तों के लिए
मेरा ये सफर रहा खुद से खुद की पहचान के लिए।

जैसे ही हम अपने गंतव्य स्थान पहुंचे, मेरी खुशी इतनी बढ़ गयी कि खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। मैंने सबसे पहले रेगिस्तान के जहाज को खड़ा पाया और उस पर सवारी की तो ऐसा लग रहा था मानो पूरे रेगिस्तान का चक्र लगा कर आई और ऐसे भी लग रहा था कि हम भी रानी लक्ष्मीबाई की तरह घोड़े में सवार होकर किसी युद्ध में जा रहे हैं। समुद्र के पानी का भी हमने भरपूर आनंद लिया।

दूसरे दिन हम सभी चिल्का लेक गए। जैसे ही हम नाव में बैठे बारिश भी अधिक होने लगी, बिजली कड़कने लगी। दिल में घबराहट इतनी बढ़ गई कि कहीं हम इसी लेक में तो न डूब जाएँ। लेकिन फिर भी हमने वीडियो लेना और सेल्फी लेना नहीं छोड़ा। जब बारिश और तेज होने लगी तो हमने त्रिपाल से अपनी नाव को पूरी तरह से ढँक लिया और मुझे ऐसा लगने लगा कि हम किसी तम्बू के अंदर हैं। नाव में हम कभी खड़े होते तो कभी बैठते थे। हमने लगभग डेढ़ घंटे तक नाव में पानी के ऊपर समय बिताया और वापस लौट आए। इस तरह हम लोगों ने कई ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया और कई खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त किए और हमारा शैक्षणिक भ्रमण का दिन समाप्त हो गया।

किसी जगह के बारे में जिंदगी भर
सुनने से अच्छा है कि एक बार
उसे जाकर खुद देख लो!

नीलिमा एंगा पूर्ति
द्वितीय वर्ष 'ब'

शैक्षणिक भ्रमण

रेलगाड़ी करती छूक छूक छूक
मेरा दिल करता धुक धुक धुक
सबके मन को लुभाती है
रेलगाड़ी करती छूक छूक छूक

शैक्षणिक भ्रमण जीवन का मेरा पहला अनुभव रहा और यह बहुत ही मजेदार रहा। जब मैं हॉस्टल से अपना सूटकेस लेकर निकल रही थी तो मुझे लग रहा था कि मैं काम करने के लिए जा रही हूँ। सबके चेहरे पर एक अलग सी खुशी झलक रही थी।

जैसे ही भूनेश्वर प्रवेश किए, गर्मी का ठिकाना ही नहीं रहा। भूनेश्वर शहर बहुत ही साफ-सुथरा और शांत था। पुरी पहुँचते ही समुद्र नहाने गए। इतना बड़ा समुद्र देखकर मेरी आँखें फटी रह गयी, मानो कि मैं धरती से समुद्र में समा गई हूँ। लोगों को नहाते देखकर मुझसे भी रहा न गया और बिना देरी किए पानी में कूद गयी और नीली-नीली समुद्र में आनंद लेने लगी। निकालने का मन तो नहीं कर रहा था लेकिन क्या करें मजबूरन लौटना पड़ा। जब तक समुद्र से आँखें ओझल न हुई पलट-पलट कर देखती ही रही। बार-बार समुद्र के पानी की याद आ रही थी। फिर बारी आई नाव चढ़ने की। इतना बड़ा चिल्का झील देखकर तो मैं हैरान सी रह गई, कि इतना विशाल झील भी होता है। नाव चढ़ने से पहले मुझे बहुत डर लगा था, लेकिन साथ में चढ़े तो बस में चढ़ने के जैसा प्रतीत हुआ।

इस पूरे शैक्षणिक भ्रमण में ग्रुप के साथ घूमना और अनुभव प्राप्त करने में अत्यधिक खुशी हुई।

समीरा टेटे
द्वितीय वर्ष 'ब'

शैक्षणिक भ्रमण

झर-झर करती पानी की बूंदें, जर-जर करती बादलों की गरजन के साथ हम सभी प्रशिक्षणार्थी निकल पड़े डोलफ़िन देखने के लिए चिल्का झील। मूसलाधार बारिश में तेज बादलों के गर्जन को चीरते हुए हमारी नाव आगे बढ़ते हुए हम सभी पहुंचे अपने लक्ष्य पर।

पर मौसम खराब होने के कारण डोलफ़िन का दर्शन न हो सका। उसके बाद हम गए sea mouth. जगह बहुत ही मनमोहक था। बारिश में भींगते हुए हमने बंगाल की खाड़ी का दर्शन किया। हमने बहुत सारे मंदिरों के दर्शन किये, उनमें प्रमुख हैं-जगनाथ मंदिर, कोणार्क मंदिर, धौला गिरि, उदयगिरि, खंडगीरी आदि। अंत में हम नन्दन-कानन पार्क का भ्रमण किया। वहाँ बहुत सारे जानवर देखने को मिले। जैसे- सफ़ेद बाघ, हाथी, बंदर, भालू, लोमड़ी, साँप आदि। साथ ही, बहुत सारे पक्षी भी दिखाई दिये।

रोशन मिंज
द्वितीय वर्ष 'ब'

Congratulations!

सामुदायिक कार्य-गेहूँ फसल की कटाई

12 अप्रैल दिन शनिवार को पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार गेहूँ की कटाई की गई। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने पूरी ईमानदारी एवं लगनता के साथ इस सामुदायिक कार्य को सम्पन्न किया। बता दें कि यह सामुदायिक कार्य शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम का इस अभिन्न अंग है। इसके माध्यम से हम दलीय कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं, साथ ही दलीय भावना को समझने का प्रयास करते हैं। शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में हमें विभिन्न अवसरों पर एक दल के रूप में कार्य करने की आवश्यकता होती है और कार्य सम्पादन करना पड़ता है। एक दल के रूप में कार्य करने के लिए कुछ प्रमुख कौशलों जैसे- एक दूसरे को समझना, दलीय भावना से काम करना, दलीय लक्ष्य को जानना एवं समझना, दल के लक्ष्य को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत समर्पण, कामों में एक-दूसरे की मदद करना, खुद सीखना और दूसरों को सिखाना, दल के सदस्य के नेतृत्व का आदर एवं सम्मान करना आदि का होना बहुत ही आवश्यक है।

कहा जाता है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। एक क्रिकेट टीम का ही उदाहरण लें। हम पाते हैं कि टीम का एक बल्लेबाज भले ही शतक जमा दे लेकिन बाकी खिलाड़ी रन नहीं बना सकें तो टीम को हार का सामना करना पड़ता है। क्षेत्र रक्षण में भी एक खिलाड़ी के भरोसे रन को नहीं रोका जा सकता है। कहने का अर्थ है कि टीम में प्रत्येक खिलाड़ी की आवश्यकता महत्वपूर्ण होती है।

STUENT REPRESENTATIVES – APRIL,2025

ACADEMIC & CULTURAL REPRESENTATIVES

Navin Kullu

Pawan Kujur

Riya Ritika Hembrom

Anshu Guria

AGRICULTURE & CLEANING REPRESENTATIVES

Xavier Bhengra

Ankit Kujur

Sakshi Lakra

Reena Tigga

LITURGY & PRAYER REPRESENTATIVES

Tobit Kerketta

Jolsan Jojo

Anjna Soreng

Nilima Kiro

HEALTH & HYGIENE REPRESENTATIVES

Paskal Hassa

Jowakim Topno

Prerna Kujur

Kareena Tirkey

GAMES & SPORTS REPRESENTATIVES

Nishant Toppo

Ashik Ekka

Alisha Bara

Alpha Kujur

NOTICE BOARD REPRESENTATIVES

Prince Kujur

Rohan Murmu

Ishpriya Minj

Rupanjli Tigga

FLOWER GARDEN REPRESENTATIVES

Jemmy Ekka

Sagar Modi

ELECTRICITY REPRESENTATIVES

Godwin Minz

Alkan Minj

BEST WISHES

Published on 07/05/2025